पत्र

जुलाई-15 का अक्षर पर्व मिला। सबसे ज्यादा ध्यान आकर्षित किया 'नागार्जुन का कविता कर्म चर्चा में योगदान' ने। अजित कुमार ने नागार्जुन की कविता का मूलपाठ देकर अच्छा किया। हर कोई अब फिर से इसका पठन कर मूल्यांकन कर सकेगा। पूरी बात तो साफ तब होगी जब विजय बहादुर सिंह की इस पर टिप्पणी प्राप्त हो जाएगी। शायद यह अगले अंक में आ जाए। यह अजीत जी का काव्य विवेक ही कहा जाएगा कि उन्होंने नागार्जुन सरीखे बड़े कवि की पंक्तियों पर सोच समझकर आपत्ति की। वरना गलती को नजरअंदाज करके छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं- विद्वान पाठक ही नहीं, आलोचक भी। अतिरंजना के मोह में बाबा नागार्जुन कोयल को ठूंठ पर बिठा गए हों। तथापि काव्य में 'औचित्य' का सवाल तो उठ ही सकता है। वही उठा है। न्यूनतम बदलाव वाला पाठ- 'शासक की बंदूक' की पूंछ (रदीफ) छोड़कर अधिकतम बदलाव वाला ही लगता है। अगले अंक में इस पर विमर्श पढ़ना रुचिकर होगा।

चन्द्रसेन विराट, 121, बैकुंठधाम कॉलोनी
आनंद बाजार के पीछे, इंदौर-452018 (म.प्र.)

अक्षर पर्व अगस्त-2015 अंक देखकर महान शास्त्रीय गायक भीमसेन जोशी के गाए हुए गीत की पंक्ति- ''मिले सुर मेरा तुम्हारा फिर सुर बने हमारा'' याद आ गई, जो राष्ट्रीय एकता हेतु भारत सरकार द्वारा बनाए एक विज्ञापन में थी। तो इस बार आरंभ में ललित सुरजन और अंत में सर्वमित्रा सुरजन दोनों ने विचारों के ऐसे 'स्वर' दिए हैं कि साधुवाद तो देना ही होगा।

ललित जी 'हिन्दी साहित्य का नया इतिहास' लिखने हेतु आपने ऐसी नींव डाल दी है, जैसे आजकल मकान बनाते समय पहले पिलर डाल देते हैं (खड़ी कर देते हैं) और फिर बाद में ईंट जोड़ने का काम करते हैं। सूची तो मार्गदर्शन का अद्‌भुत कार्य करेगी। मेरा तो आग्रह है कि आप ही इस ओर अग्रसर हों, बहुत ही सुंदर होगा।

नारी शक्ति सदैव ही परिवार एवं समाज को संभालती रही है 'सेल्फीवाला समाज' के अंतर्गत आपने जिस प्रकार भारतीय महिला खिलाड़ियों (सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, मैरी काम और ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर गई भारतीय महिला हॉकी खिलाड़ियों की सफलता की ओर ध्यान आकृष्ट किया है तथा इरा सिंघल के संघर्ष का जिक्र किया है, वह काबिले तारीफ है। आपने ठीक ही लिखा है कि हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, पर प्रतिभाओं का दमन किया जाता है। कविताओं में राजन की 'सेल्फी समय' और 'दिनकर चौराहा' अच्छी लगी तथा तबस्सुम की एक कविता 'कब्रगाहों की वीरान सल्तनत' ने काफी झंकृत किया। राजकुमार कुंभज का प्रश्न समीचीन है।

-कुशेश्वर
पी-166/ए, मुदियाली फर्स्ट लेन
कोलकाता-724, मो. 98318-94193

अगस्त अंक के कलात्मक आवरण पृष्ठ पर गायों का हर्षित समुदाय नीर भरे मेघों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता सा लग रहा है। प्रत्येक अंक में ललितजी के गहन-गंभीर आलेख के साथ प्रस्तावना में साक्षात्कार होता है। उनकी विशद अध्ययनशीलता और साहित्य की विधाओं और समसामयिक सृजन धाराओं के साथ उनका जुड़ाव इस स्तंभ के माध्यम से हमारे सामने आता है। मैंने भोपाल के एक साहित्यिक कार्यक्रम में उनकी चिंतन प्रखरता को महसूसा है। उपन्यासविधा के गौरव पुरुष भीष्म साहनी के बारे में पूर्व अंक में काफी उपयोगी सामग्री आपने दी है। श्री श्याम कश्यप का संस्मरण प्रकाशित कर आप ने इस क्रम को उनकी जन्म शताब्दी के प्रसंग में जारी रखा है, यह सुखद बात है। डा.सुधेश का लेख भी काफी कुछ जोड़ता है। डा.वेदप्रकाश अमिताभ ने भीष्मजी के कथापक्ष के एक अनछुए पृष्ठ को खोलने का काम किया है। अक्षरपर्व का यह प्रयास भीष्म साहनी के रचनाकार को हर कोण से समझाने का अवसर प्रदान करेगा। आलोचक प्रवर डा.विजय बहादुर सिंह के आलेख यादें: मंचीय लोकप्रिय कविता में अपने दीर्घकालीन अनुभवों को उन्होंने खंगाला है। राजकुमार कुंभज ने कविवर निराला का जो विवेचन किया है, वह विचारणीय है। निराला तो वास्तव में मानवतावादी कवि थे। संग्रह की कविताएं और कहानियां पठनीय हैं। अनुपम मिश्र के स्मरण में अपनापन और ताजगी है। आपका उपसंहार भी समय की पदचाप को ठीक-ठीक सुनते हुए चलता है, बधाई।

युगेश शर्मा, 11 सौम्या एन्क्लेव एक्सटेंशन, सियाराम कालोनी, चूना भट्टी, भोपाल। मो.9617278965

भीष्म साहनी अंक सराहनीय अंक है। इसे संभालकर रखूंगा। बहुत उपयोगी सामग्री है।

विनोद शाही, 9 चीमा नगर, एक्स, मितापुर रोड
जालधंर-144003, फोन-`9814658698